V.V.S ✓ 1 'A' B.A.I Hons (History)

Q:— What do you understand by Ashoka's Dhamma. Describe the methods adopted him for its propagation.

Ans:→ कलिंग के युद्ध में निरपराध प्राणियों के मरने से सम्राट अशोक को अत्यधिक आत्मग्लानि हुई। एक लाख से कलिंग राज्य में लाखों नरसंहार हुए इससे अधिक संख्या में बंदी बनाए गये लोगों के पश्चात युद्ध में भारी अशान्ति हुई। इस प्रकार के विनाशकारी युद्ध से उसे अत्यधिक दुःख हुआ और उसकी शान्ति के लिए उसने अपने संतप्त मन को धर्म की ओर लगाया।

वस्तुतः अशोक के जीवन में उसके भाईयों की मृत्यु, पुत्र कुणाल की आँखों का निकाला जाना, रानी तिष्यरक्षिता का मनमाना अत्याचार, कलिंग का युद्ध आदि ऐसी घटनाएँ थी। जिसने उसका हृदय द्रवित कर दिया और उसका मुख धर्म कार्यों की ओर मोड़ दिया। अब प्रश्न उठता है कि इस युद्ध के पश्चात उसने जिस धर्म को अपनाया वह कौन सा धर्म रहा होगा। यह धर्म ब्राह्मण था या जैन था या बौद्ध धर्म था।

अपनी पूर्व परम्पराओं के अनुसार पूर्वजों के अनुरूप अपने प्रारम्भिक जीवन में अशोक ब्राह्मण धर्मानुयायी और भगवान शंकर का भक्त था। परन्तु कलिंग युद्ध के नरसंहार के पश्चात वह प्राणी मात्र के प्रति सहानुभूति और दया के विचार रखने लगा। बुद्ध में हो, परन्तु वास्तव में अशोक के धर्म का वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए उसके धर्म को विभिन्न मतों में परखना होगा। यह विभिन्न मत इतिहासकारों की दृष्टि में निम्नांकित है।

व्यक्तिगत धर्म :— कुछ इतिहासकारों के अनुसार अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म को अपनाया। अपने प्रारम्भिक काल से कलिंग युद्ध तक वह ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था।

Scanned with CamScanner

परन्तु कलिंग युद्ध में हुए मानसिक एवं बौद्धिक क्रांति के बाद अशोक ने बौद्ध संघ की नियमित सदस्यता स्वीकार की एवं बौद्ध धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया।

अशोक का व्यक्तिगत जीवन बौद्ध था इस पक्ष में निम्नलिखित प्रमाण है। अनेक साहित्यिक ग्रन्थ दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान आदि इसके बौद्ध होने को प्रमाणित करते हैं। रुपनाथ, सारनाथ, कौशाम्बी एवं सांची के लघु शिलालेख में बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में उल्लेख मिलता है। बौद्ध धर्म का प्रतीक स्तम्भ अशोक के अनेकों शिलालेख में मिलता है। साथ ही साथ अशोक स्तम्भ के शिखर पर हाथी, सिंह, बैल एवं घोड़े कि मूर्ति, राधाकुमुद के विचार से बुद्ध की विभिन्न अवस्थाओं कि प्रतीक है। इसका पारलौकिक में नित्य उत्तम धर्म कि उपासना करना शिखर पर बुद्ध की पद चिन्ह अंकित है कि इसको बौद्ध संघ का परिचालक है। अशोक द्वारा तृतीय बौद्ध संगीति को बुलाना भी इसके बौद्ध होने का प्रमाण देता है। बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख स्थान जैसे लुम्बिनी, सारनाथ, गया आदि की यात्रा की। बौद्ध संघ कि रक्षा के लिए धर्ममहामात्रों कि नियुक्ति कि। बौद्ध संघ में उत्पन्न फूट एवं कलह को दूर करने का प्रयत्न किया एवं फूट पैदा करने वाले भिक्षुकों को संघ से निष्कासित कर दिया। चीनी यात्रियों ने भी इसे बौद्ध धर्म का अनुयायी माना है। इस समस्त तर्कों से प्रमाणित होता है कि वह बौद्ध धर्म अनुयायी था।

राजधर्म:— कुछ इतिहासकार जिनमें फ्लीट का नाम प्रमुख है। इनका कहना है कि अशोक ने जिस धर्म का प्रतिपादन किया था, वह व्यक्तिगत धर्म न होकर राज धर्म था, अर्थात् अशोक इसी धर्म के आधार पर ही शासन करता था। किन्तु फ्लीट का कथन तर्कसंगत नहीं है क्योंकि राज धर्म केवल राजा का ही धर्म होता है जबकि अशोक

Scanned with CamScanner

का धर्म प्रजा के लिए भी था। अतः इसके धर्म को हम राजधर्म नहीं कह सकते।

उपासक बौद्ध धर्म !— इतिहासकार भंडारकर के मत में अशोक का धर्म विशुद्ध रूप से भिक्षु धर्म नहीं था, वरन् उपासक धर्म का वह अनुयायी था। अशोक ने स्वयं गृहस्थ होकर प्रजा में उपासक बौद्ध धर्म का प्रचार किया। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने बौद्ध धर्म के दार्शनिक पक्ष जैसे चार आर्य सत्य, अष्टांगीय मार्ग आदि को नहीं माना और केवल इस धर्म के नैतिक एवं पवित्र आचरण पर ही बल दिया।

सार्वभौम धर्म:— शिलालेख 12 में अशोक के धर्म का सार्वभौम पक्ष स्पष्ट रूप से वर्णित है। राधाकुमुद एवं डा० स्मिथ के अनुसार उसका धर्म किसी विशेष सम्प्रदाय में सीमित न होकर सार्वभौम था, जिसमें समस्त धार्मिक सम्प्रदायों के नैतिक सिद्धान्त का समन्वय था। इसलिए अशोक अपने व्यक्तिगत जीवन में बौद्ध होते हुए भी वह धर्म सहिष्णु था। ब्राह्मणों और जैनों को भी सम्मान रूप से देखता था।

अंत में निष्कर्षतः हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं कि अशोक का धर्म बौद्ध धर्म से प्रेरित होते हुए भी सार्वभौमिक था। यह प्रवृत्तितः प्रजा के निमित्त था। लोक एवं परलोक में प्रजा को सुख देना अशोक अपना कर्तव्य समझता था। इस आध्यात्मिक उत्थान के लिए ही अशोक अपना कर्तव्य समझता था। इस आध्यात्मिक उत्थान के लिए ही अशोक ने अपने धर्म का प्रचार और प्रचलित धर्म आचार-व्यवहार एवं नैतिक नियमों का व्यावहारिक संकलन था।

1. **प्रचार !**→ सम्राट द्वारा धर्म का पालन ! — अशोक ने जिस धर्म का प्रतिपादन किया उसका उसने जीवन पर्यन्त तक पालन किया। सक्रिय रूप से उसने संघ की सेवा की और एक भिक्षुक की भाँति त्यागमय जीवन व्यतीत किया। उसकी इस त्यागमय जीवन एवं धर्म परायणता ने

प्रजा पर बहुत प्रभाव पड़ा और प्रजा ने भी सम्राटों के आदर्शों के अनुगमन करना शुरू कर दिया।

2. धर्म को राजधर्म बनाना :— अशोक ने न केवल व्यक्तिगत जीवन को धर्ममय बनाया वरन् उसने सम्पूर्ण शासन को धर्ममय बना दिया। अपने राज्य की सम्पूर्ण शक्ति तथा उसके प्रचुर साधनों को धर्म प्रचार में लगा दिया। राजधर्म बन जाने के कारण। उसके उत्तराधिकारियों ने भी इसे अपनाया जिससे सम्राट की मृत्यु के उपरान्त भी यह जोर जागता रहा।

3. धार्मिक क्रिया-कलाप :— धार्मिक प्रचार हेतु उसने धर्म महामात्रों को नियुक्त किया। इन धर्म महामात्रों ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण। जनता की रुचि धर्म की ओर आकृष्ट किया। अपनी विहारयात्राओं को जो मनोरंजन के लिए की जाती थी बन्द करवा दिया और उनके स्थान पर धर्मयात्राएं करने लगा। समय-समय पर अशोक अपनी प्रजा को धर्म उपदेश का आयोजन का व्यवस्था करता था। उसने स्वर्ग में रहने वाले विमानों आदि का प्रदर्शन किया और प्रजा को स्वर्गप्राप्ति का प्रलोभन दिया। उसने प्रजा को धर्म मंगल का उपदेश दिया। रोगियों, वृद्धों, दीन, दुखियों तथा धार्मिक संस्थाओं को दान देने की व्यवस्था की। औषधालय आदि का निर्माण कर लोकहित के कार्य को सम्पन्न किया।

4. पशु-बलि-निषेध :— पशुओं के वध का निषेध करके तथा सम्पूर्ण प्राणी मात्र पर दया दिखाने का उपदेश दिया जो अशोक के धर्म का मूलमंत्र था।

5. मठ-लेखों तथा ग्रन्थों की रचना :— देश के विभिन्न भागों में उसने मठों का निर्माण कराया जिसमें बौद्ध भिक्षु भिक्षुणी रहते थे। वे सभी सदैव धर्म के चिन्तन तथा प्रचार में लगे रहते थे। धर्म प्रचार हेतु ही उसने अपने सिद्धान्तों तथा आदर्शों को पर्वतों की चट्टानों, पत्थरों के स्तम्भों तथा पर्वत की गुफाओं में लिखवाकर प्रजा तक पहुंचाया। अनेक धर्म ग्रन्थों की रचना पालि-

Scanned with CamScanner

भाषा में करवायी थी जो जनसाधारण की भाषा थी। चूंकि इस भाषा को साधारण लोग भी अच्छी तरह से समझ लिया करते थे; अतः इससे धर्म प्रचार में बड़ा मदद मि[ली]

6. बौद्ध संगीति :→ अशोक ने अपने शासनकाल में राजधानी पाटलीपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति बुलवाई थी जिसमें बौद्ध धर्म ग्रन्थों का संशोधन किया गया था और बौद्ध संघ में जो दोष आगए थे उनको दूर करने का प्रयत्न किया। इन संशोधनों तथा सुधारों से बौद्ध धर्म में जो शिथिलता आ रही थी वह दूर हो गई और अग्रसर होने के लिए उसमें नया जीवन आ गया।

7. अन्य देशों में प्रचार :→ परन्तु इतने से ही अशोक को संतोष नहीं हुआ। वह बौद्ध धर्म को विश्व धर्म में परिण[त] करना चाहता था। उसने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को धर्म का प्रचार करने के लिए श्री लंका (सिंहलद्वीप भेजा।) बर्मा, तिब्बत, जापान, कोरिया तथा पूर्वी द्वीप समूह में भी भिक्षुक धर्म प्रचार हेतु भेजे। The age of Imperial unity में उसके द्वारा भिन्न भिन्न देशों में भेजने वाले धर्म प्रचारकों की सूची दी गई है जो निम्न है :—

	प्रचारकों के नाम	देशों के नाम
1	मध्यांतिक स्थविर	काश्मीर और गंधार
2	महारक्षित स्थविर	यवन अथवा योकराष्ट्र
3	मध्यम स्थविर	हिमालय प्रदेश
4	धर्म रक्षित	अपरान्तक
5	महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
6	महादेव	मैसूर
7	रक्षित स्थविर	बनवासी
8	सोणा और उत्तर	सुवर्णभूमि
9	महेन्द्र आदि	लंका

यद्यपि बौद्ध धर्म अपनी जन्म भूमि में उन्मूलित सा हो गया है, परन्तु विदेशी देशों में वह अब भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। अशोक द्वारा किये गये

उपर्युक्त प्रयत्नों के फलस्वरूप उसके शासनकाल में बौद्ध धर्म को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त हो गया। इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए मजूमदार महोदय ने लिखा है :— " इस काल में बौद्ध धर्म को इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया कि वस्तुतः अन्य धर्म लुप्त हो गया। परन्तु इसका सबसे अधिक श्रेय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बौद्ध सम्राट चक्रवर्ती धर्मराज को मिलना चाहिए।"

वस्तुतः धन्य है वह धर्म प्रवीण धनुर्धर जिसने अपने धर्म युद्ध से धर्म निरपेक्षता का धनुष - धारण कर धर्म विजय की धवल ध्वजा फहराई और धन्य है वह धर्म धारा धात्री जिसने अपने प्रवीण पुत्र से पावन पद पान कराकर उस परम पुराण का पावन पोषण किया। इसी से तो उसके धर्म चक्र को स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज में स्थान देकर भारत सरकार भारत की करोड़ों जनता से उसका अभिनन्दन करा रही है और उसे अपनी श्रद्धांजली अर्पित करा रही है।

— o —